कक्षा - षष्ठ

विषय - हिन्दी द्वितीय पत्र

पाठ - 1

अपने पाठ्यपुस्तक के अंतर्गत्त 'हिमालय' शीर्षक कविता की 16 पंक्तियाँ लिखें -

हिमालय

युग - युग से है अपने पथ पर

देखो कैसा खड़ा हिमालय !

डिगता कभी न अपने प्रण से

रहता प्रण पर अड़ा हिमालय !

जो - जो भी बाधाएँ आईं

उन सब से ही लड़ा हिमालय,

इसीलिए तो दुनिया भर में

हुआ सभी से बड़ा हिमालय !

अगर न करता काम कभी कुछ

रहता हरदम पड़ा हिमालय,

तो भारत के शीश चमकता

नहीं मुकुट - सा जड़ा हिमालय !

खड़ा हिमालय बता रहा है

डरो न आँधी पानी में,

खड़े रहो अपने पथ पर

सब कठिनाई तूफानी मेंं।

__ सोहनलाल द्विवेदी

पाठ - 3 सादगी की मूरत

क) मौखिक प्रश्न

1. भाई से कहाँ मिलने की बात थी ?

उत्तर - पटना।

2. जूतों के रूप - रंग का पता क्योंं नहीं चल रहा है ?

उत्तर - मिट्टी की परत पड़ने के कारण।

3.राजेन्द्र बाबू के शरीर का गठन कैसा था ?

उत्तर - सामान्य भारतीय जन की आकृति और गठन की छाया।

4. लेखिका को राजेन्द्र बाबू से निकटता का अवसर कब मिला?

उत्तर - 1935 को प्रयाग में ।

ख) लघु उत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका शीतावकाश में अपने घर कहाँ जा रही थी ?

उत्तर - लेखिका प्रयाग में बी. ए. की छात्रा थी और शीतावकाश में अपने घर भागलपुर जा रही थी ।

2. लेखिका को किसे देखकर अभिवादन का ध्यान आया?

उत्तर - प्लेटफॉर्म पर एक ओर बेंच पर देहाती वेशभूषा में कुछ नागरिक जनों से घिरे एक सज्जन विराजमान थे, भाई से यह जानने के उपरांत कि उक्त सज्जन राजेन्द्र बाबू हैं लेखिका को उनके अभिवादन का ध्यान आया।

3. संगम तट पर किसकी पलटन राजेन्द्र बाबू की पत्नी को घेर लेती थी ?

उत्तर - संगम तट पर कोलाहल करते हुए पंडों की पूरी पलटन उन्हेंं घेर लेती थी।

4. प्रयाग से कौन - सी चीज एक दर्जन लाने का आदेश लेखिका को मिला था?

उत्तर - प्रयाग से सिरकी के बने एक दर्जन सूप लाने का आदेश लेखिका को मिला था।

ग) दीर्घ उत्तरीय प्रश्न

1. लेखिका को स्टेशन पर कुछ घंटे क्यों व्यतीत करने पड़े ?

उत्तर - लेखिका प्रयाग में बी.ए. की छात्रा थी और शीतावकाश में अपने घर भागलपुर जा रही थी। पटना में भाई से मिलने की बात थी, अत: स्टेशन पर ही प्रतीक्षा के कुछ घंटे व्यतीत करने पड़े।

2. राजेंन्द्र बाबू की वेशभूषा कैसी थी ?

उत्तर - राजेंन्द्र बाबू की वेशभूषा खादी की मोटी धोती, ऐसा फेंटा देकर बाँधी गई थी कि एक ओर दाहिने पैर पर घुटना छूती थी और दूसरी ओर बाएँ पैर की पिंडली। मोटे, खुरदरे, काले बंद गले के कोट के ऊपर वाला भाग बटन टूट जाने के कारण खुला था और घुटने के नीचे का भाग बटनों से बंद था। सर्दी के कारण पैरों में मोजे - जूते तो थे पर एक मोजा जूते पर उतर आया था और दूसरा टखने पर घेरा बना रहा था। गाँधी टोपी की स्थिति तो और विचित्र थी। उसकी आगे की नोंक बाईं भौंह पर खिसक आई थी।

3. राजेंन्द्र बाबू की सहधर्मिणी कैसी थी ?

उत्तर - राजेंन्द्र बाबू की सहधर्मिणी सच्चे अर्थ में धरती की पुत्री थीं - साध्वी, सरल, क्षमामयी और सबके प्रति ममतामयी। बिहार के जमींदार परिवार की वधू और स्वतंत्रता संग्राम के अपराजेय सेनानी की पत्नी होने पर भी उन्हें कभी अंधकार न हुआ। छात्रावास की सभी बालिकाओं तथा नौकर - चाकरों का समान रूप से ध्यान रखती थी।

4. बालिकाओं के संबंध में राजेंन्द्र बाबू का क्या निर्देश था ?

उत्तर - बालिकाओं के संबंध में राजेंन्द्र बाबू का स्पष्ट निर्देश था कि वे सामान्य बालिकाओं के साथ बहुत सादगी तथा संयम से रहें। वे खादी के कपड़े पहनती थीं, जिन्हें वे स्वयं धो लेती थीं। उनके साबुन - तेल आदि का व्यय भी सीमित था। कमरे की सफाई, झाड़ - पोंछ, गुरूजनों की सेवा आदि भी उनके अध्ययन के आवश्यक अंग थे।

5. लेखिका ने राजेंन्द्र बाबू को किस प्रकार उपवास का पारण करते हुए देखा ?

उत्तर - राजेंन्द्र बाबू तथा उनकी सहधर्मिणी सप्ताह में एक दिन अन्न ग्रहण नहीं करते थे। संयोग से लेखिका उनके उपवास के दिन ही पहुँची थी। लेखिका आज भी वह संध्या नहीं भूलती जब भारत के प्रथम राष्ट्रपति के सामान्य आसन पर बैठकर दिनभर के उपवास के उपरांत केवल कुछ उबले आलू खाकर पारण करते हुए देखा।

घ) रिक्त स्थानोंं की पूर्ति कीजिए।

1. मैं प्रयाग में बी.ए. की छात्रा थी।

2. उनकी वेशभूषा की ग्रामीणता तो दृष्टि को और भी उलझा देती थी।

3. गाँधी टोपी की स्थिति तो और भी विचित्र थी।

4. उनकी सहधर्मिणी में भी किसी प्रकार का परिवर्त्तन नहीं आया।

5. राजेंन्द्र बाबू तथा उनकी पत्नी सप्ताह में एक दिन अन्न ग्रहण नहीं करते थे।